REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2021

भारत में विदेशी पर्यटकों की संख्या में परिवर्तन स्तर का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. भुनेश्वर टेंभरे
प्राध्यापक भूगोल , रानी दुर्गावती शासकीय स्नातकोत्तर महाविघालय मण्डला म.प्र.

सारांश

अतिथि देवो भवः,अतुलनीय भारत जैसे महत्वाकांक्षी एवं भावना प्रधान राष्ट्रीय पर्यटन नीति के कारण भारत तीव्र गति से पर्यटन उद्योग का महत्वपूर्ण क्षेत्र बनकर उभरा है। शासन स्तर पर प्रदान की जाने वाली बुनियादी सुविधाओं, भारत के नैसर्गिक एवं श्वासरोधक सौंदर्य, ऐतिहासिक एवं पुरातातविक विरासत,भारत की विविधतापूर्ण सांस्कृतिक पृष्ठभूमि न केवल घरेलु पर्यटक अपितु विदे"ाी पर्यटकों का भी आकर्षण का केन्द्र है। वि"व के अन्य क्षेत्रों की तुलना में चिकित्सा सुविधाओं का चि"वस्तरीय विकास भी पर्यटको केआकर्षण का प्रमुख कारण है। सेवाभाव का नैसर्गिक गुण,अतिथियों को भगवान मानने की समृद्व"ाली विरासत भारतीयों को आद"ा मेजबान बनाती है। इन्ही विविधताओं से भरे परिदृ"य के कारण भारत में विदे"ाी पर्यटकों की संख्या में अन्य दे"ाों की तुलना में तीव्र गति से वृद्वि हो रही है। प्रस्तुत शोध पत्र इन्ही तथ्यों को वि"लेषित करने का प्रयास है।

शब्द कुंजीः— अतिथि देवो भवः,नैसर्गिक एवं श्वासरोधक सौंदर्य, समृद्ध ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत .

परिचयः—

वर्तमान समय में पर्यटन ने एक व्यवस्थित उद्योग का रूप प्राप्त कर लिया है। प्रत्येक दे"ा अथवा राज्य सरकारें पर्यटन को मौज मस्ती के रूप से बाहर निकालकर सुव्यवस्थित उद्योग के रूप में स्थापित करने में प्रयासरत हैं। वर्तमान समय में पर्यटन केन्द्रों को इस तरह से विकसित किया जा रहा है कि पर्यटकों को न कवल संपूर्ण आनंद प्राप्त हो सके, अपितु पर्यटक अपने आपको शारीरिक रूप से स्फूर्त, मानसिक रूप से तरूण, सांस्कृतिक रूप से समृद्व एवं अंतरमन से पर्यटन केन्द्रों को देखने के साथ—साथ महसूस भी कर सकें। भारत एवं भारत के समस्त राज्य इसके अपवाद नही है। भारत की विविधता से परिपूर्ण सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, धार्मिक एवं आध्यात्मिक परिदृ"य,अतिथि देवो भवः का नैसर्गिक सेवा भाव भारत के मेजबानी के स्वरूप को अन्य दे"ाों से अलग करता है। शासन स्तर पर प्रदान की जाने वाली बुनियादी सुविधाओं, भारत के नैसर्गिक एवं श्वासरोधक सौंदर्य, ऐतिहासिक एवं पुरातातविक विरासत,भारत की विविधतापूर्ण सांस्कृतिक पृष्ठभूमि न केवल घरेलु पर्यटक अपितु विदे"ाी पर्यटकों का भी आकर्षण का केन्द्र है। चिकित्सा केन्द्रों का विस्तार, ध्यान, योग एवं आयुर्वेद की लंबी परंपरा भी विदे"ाी र्प्यटकों को आकर्षित करने मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे है। प्रस्तुत शोध पत्र इन्ही तथ्यों को वि"लेषित करने का प्रयास है।

अध्ययन का उद्देश्य:—

प्रस्तुत शोध पत्र में भारत के विभिन्न राज्यों के अंतर्गत विदे”ाी पर्यटकों की संख्या में वृद्वि के तथ्यो का वि”लेषण करना,विदे”ाी पर्यटकों की संख्या में वृद्वि के कारणों का वि”लेषण करना एवं प्र्यटकों की संख्या में वृद्वि के लिए व्यवहारिक सुझाव प्रस्तुत करना है।

आकडों के स्त्रोत एवं शोध प्रविधि:—

अध्ययन के उद्वे”यों को प्राप्त करने के लिए ब्यूरों आफ इमिग्रे”ान,राज्य सरकारों एवं भारत सरकार के पर्यटन विभागों से अध्ययन अवधि वर्ष 2006 एवं 2018 के द्वितीयक संमक प्राप्त किये गये है। इसके साथ ही मार्केट रिसर्च वेबसाइट से आव”यकतानुसार संमक प्राप्त किये गये है। प्राप्त संमकों को अध्ययन की आव”यकता एवं उद्वे”यानुसार सरलतम एवं व्यवहारिक सांख्यिकीय विधियों के माध्यम ये निष्कर्ष प्राप्त किये गये है।

भारत में विदेशी पर्यटकों की संख्या में परिवर्तन स्तर का विश्लेषण:—

किसी भी दे”ा या क्षेत्र या राज्य में पर्यटन क्षेत्र के विकास का सर्वोतम मापक पर्यटकों की संख्या में उतरोत्तर वृद्वि का होना है। वर्तमान समय में भारत वि”व के प्रमुख पर्यटन केन्द्र के रूप में पर्यटकों की प्राथमिक पसंदीदा क्षेत्रों में से एक है। अध्ययन अवधि के दौरान भारत में विदे”ाी पर्यटकों की संख्या में लगभग 92ण्00 प्रति”ात की वृद्वि उक्त तथ्यों को पूर्णता के साथ स्पष्ट करते है। सारणी क्र 01 एवं आरेख कं 01 तथा 02 के तथ्यों को वि”लेषित करने पर यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन अवधि के दौरान भारत के अलग अलग राज्यों में विदे”ाी पर्यटकों की संख्या में वृद्वि की दर में समानता नही है। विस्तृत विवरण निम्नानुसार है। भारत में विदे”ाी पर्यटकों की संख्या में परिवर्तन स्तर का सूक्ष्मता से वि”लेषण करने के लिए निम्न वृद्वि स्तर निर्धारित किये गये है।

1.अति निम्न वृद्वि दर 2. निम्न वृद्वि दर 3. मध्यम वृद्वि दर 4. उच्च वृद्वि दर 5. अति उच्च वृद्वि दर

1.अति निम्न वृद्वि दर:— भारत के कुल राज्यों के 11.47 प्रति”ात राज्यों में अध्ययन अवधि के दौरान अति निम्न वृद्वि दर पाई जाती है। इन राज्यों की वृद्वि दर का अनुपात 0.0 से 20.00 प्रति”ात तक पाया जाता है। इस श्रोणी के अंतर्गत दादर एवं नगर हवेली,हरियाणा,कर्नाटक एवं दमन एवं दीव राज्यों में विदे”ाी पर्यटकों की संख्या में कम”ाः 12193, 8.28,03.07.02 एवं 3.11 प्रति”ात की वृद्वि दर्ज की गई है। चिकित्सा पर्यटन, आध्यात्मिक पर्यटन एवं नैसर्गिक पर्यटन क्षेत्रों का विकास वृद्वि का प्रमुख कारण है।

2.निम्न वृद्वि दर:— भारत के कुल राज्यों के 11.47 प्रति”ात राज्यों में अध्ययन अवधि के दौरान निम्न वृद्वि दर पाई जाती है। इन राज्यों की वृद्वि दर का अनुपात 21.00 से 40.00 प्रति”ात तक पाया जाता है। इस श्रेणी के अंतर्गत सर्वाधिक वृद्वि दर पं0 बंगाल एवं सबसे कम वृद्वि दर दिल्ली राज्यों में विदे”ाी पर्यटकों की संख्या में क्रम”ाः 38.38 एवं 27.94 प्रति”ात की वृद्वि दर्ज की गई है। शेष राज्यों में चंढीगढ एवं राजस्थान में पर्यटकों की वृद्वि दर का अनुपात क्रम”ाः 36.45 एवं 31.45 प्रति”ात पाया जाता है।

3.मध्यम वृद्वि दर:— भारत के जिन राज्यों में अध्ययन अवधि के दौरान विदे”ाी पर्यटकों की संख्या में 41.00 से 60.00 प्रति”ात की वृद्वि दर्ज की गइ है उन राज्यों को इस वर्ग में समाहित किया गया है। भारत के कुल राज्यों में से 17.14 प्रति”ात राज्यों में मध्यम वृद्वि दर पाई जाती है। इस श्रेणी के अंतर्गत सर्वाधिक वृद्वि दर केरल एवं सबसे कम वृद्वि दर अंडमान निकोबार द्वीप समूह राज्यों में विदे”ाी पर्यटकों की संख्या में क्रम”ाः 60.91 एवं 40. 66 प्रति”ात की वृद्वि दर्ज की गई है। शेष राज्यों में गोवा, मिजोरम, मण्प्र एवं उतराखंड राज्यों में पर्यटकों की वृद्वि दर का अनुपात क्रम”ाः 59.26,54.91,50.31 एवं 43.64 प्रति”ात पाया जाता है।

4.उच्च वृद्वि दर:— भारत के कुल राज्यों के 28.57 प्रतिषत राज्यों में अध्ययन अवधि के दौरान उच्च वृद्वि दर पाई जाती है। इन राज्यों की वृद्वि दर का अनुपात 61.00 से 80.00 प्रति”ात के बीच पाया जाता है। इस श्रेणी के अंतर्गत सर्वाधिक वृद्वि दर हिमाचल प्रदे”ा एवं सबसे कम वृद्वि दर उत्तर प्रदे”ा राज्यों में विदे”ाी पर्यटकों की संख्या में क्रम”ाः 78.54 एवं 64.97 प्रति”ात की वृद्वि दर्ज की गई है। शेष राज्यों में तमिलनाडू, मेघालय,सिक्किम,असम, पांडीचेरी,जम्मू का”मीर,महाराष्ट एवं उडीसा में पर्यटकों की वृद्वि दर का अनुपात क्रम”ाः 78.38,76.33,74.67,71.84,67.21,66.97,66.28 एवं 64.97 प्रति”ात पाया जाता है।

5.अति उच्च वृद्वि दरः– भारत के कुल राज्यों के लगभग 25.71 प्रतिषत राज्यों में अध्ययन अवधि के दौरान अति उच्च वृद्वि दर पाई जाती है। इन राज्यों की वृद्वि दर का अनुपात 80.00 प्रतिषत से अधिक पाया जाता है। इस श्रेणी के अंतर्गत सर्वाधिक वृद्वि दर झारखंड एवं सबसे कम वृद्वि दर गुजरात राज्यों में विदे"ाी पर्यटकों की संख्या में क्रम"ाः 97.51 एवं 82.03 प्रति"ात की वृद्वि दर्ज की गई है। शेष राज्यों में त्रिपुरा, मनीपुर, छत्तिसगढ, अरूणाचल प्रदे"ा, बिहार, नागालैण्ड एवं पंजाब में पर्यटकों की वृद्वि दर का अनुपात क्रम"ाः 96.84, 95.38, 92. 40, 92.31, 92.31, 92.19, 91.50 एवं 83.85, प्रति"ात पाया जाता है। वर्तमान वर्षों की तुलना में विगत वर्षों में यह राज्य पर्यटन की दृष्टि से अछुते रहे है। उक्त तथ्यों से स्पष्ट होता हैं कि इस श्रेणी के अंतर्गत उत्तर पूर्वी राज्यों के लगभग 57.14 प्रति"ात राज्यों ने अपना स्थान प्राप्त किया है।

समस्याएं एवं सुझावः–

सारणी क्रं 01 एवं आरेख क्रं 01 तथा 02 के तथ्यों के वि"लेषण तथा ऊपर वर्णित तथ्यो से यह स्पष्ट होता है कि 54.28 प्रति"ात राज्यों में विदे"ाी पर्यटकों की संख्या में लगभग 65.00 से 90.00 प्रति"ात को वृद्वि दर्ज की गई है एवं शेष 40.00 प्रति"ात राज्यों में 60.00 प्रति"ात से कम वृद्वि दर पाई जाती है। उक्त वि"लेषण से यह तथ्य भी स्पष्ट होता है कि लगभग 5.71 प्रति"ात राज्यों में विदे"ाी पर्यटकों की संख्या में गिरावट भी दर्ज की गई है। उपरोक्त वि"लेषण से यह भी स्पष्ट होता हैं कि अध्ययन अवधि के प्रारंभिक वर्षों में तथा पूर्व के वर्षों में तो राज्य या क्षेत्र पर्यटन की दृष्टि से अछुते थे उन राज्यों या क्षेत्रों में विदे"ाी पर्यटकों की संख्या में तीव्र गति से वृद्वि दर्ज की गई है। उक्त निष्कर्ष से यह भी स्पष्ट होता है कि पूर्व स्थापित पर्यटन केन्द्रों की तुलना में पर्यटक नवीनतम पर्यटन केन्द्रों की ओर अधिक आकर्षित हो रहे है। यह तथ्य भारत में पर्यटन के नये क्षेत्रों के विकाय का दयोतक भी है। एक समेकित एवं सामुदायिक प्रयास भारत को वि"व स्तर पर पर्यटन के नये केन्द्र के रूप में स्थापित कर रहा है।

सारणी क्रं 01
भारत में पर्यटकों की संख्या में वृद्वि स्तर

क्रं	वृद्वि स्तर	राज्य
1	अति निम्न वृद्वि स्तर	दमन एवं दीव,कर्नाटक, हरियाणा एवं दादर नगर एवं हवेली
2	निम्न वृद्वि स्तर	दिल्ली,राजस्थान,चढीगढ एवं पं.बंगाल
3	मध्यम वृद्वि स्तर	अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, उतराखंड,म.प्र.मिजोरम,गोवा,केरल
4	उच्च वृद्वि स्तर	उत्तर प्रदे"ा,उडीसा,महाराष्ट,जम्मू का"मीर, पांडीचेरी,असम,सिक्किम,मेघालय,तमिलनाडू एवं हिमाचल प्रदे"ा
5	अति उच्च तीव्र वृद्वि स्तर	गुजरात,झारखंड,पंजाब,नागालैण्ड,,बिहार,अरूणाचल प्रदे"ा,छत्तीसगढ,मणीपुर एवं त्रिपुरा

श्रोतःब्यूरो आफ इमिग्रे"ान एवं पर्यटन विभाग भारत सरकार वर्ष 2006 एवं 2018

आरेख कं 01
भारत में पर्यटकों के वृद्धि स्तरानुसार (प्रतिशत) राज्यों की संख्या

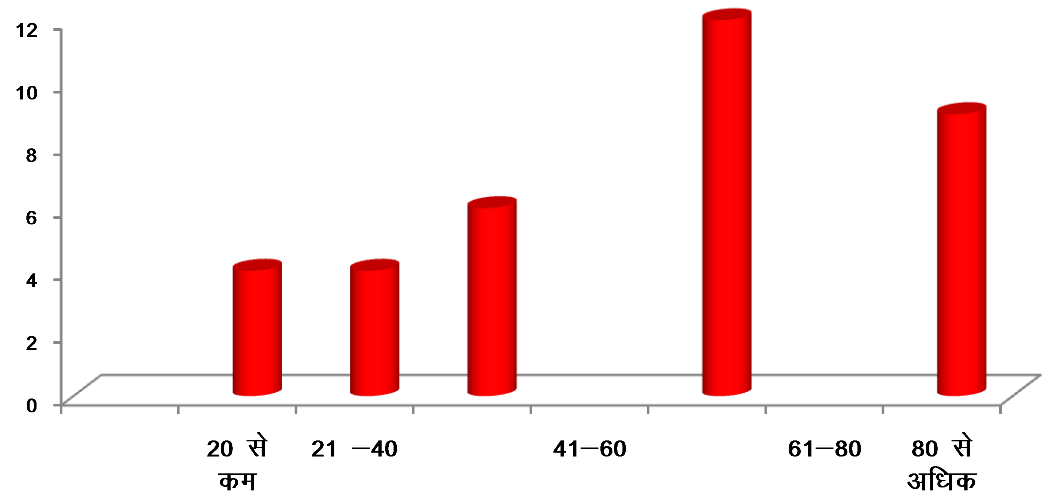

श्रोतःब्यूरो आफ इमिग्रेशन एवं पर्यटन विभाग भारत सरकार वर्ष 2006 एवं 2018

आरेख कं 02
भारत में विदेशी पर्यटकों की संख्या में परिवर्तन स्तर प्रतिशत में

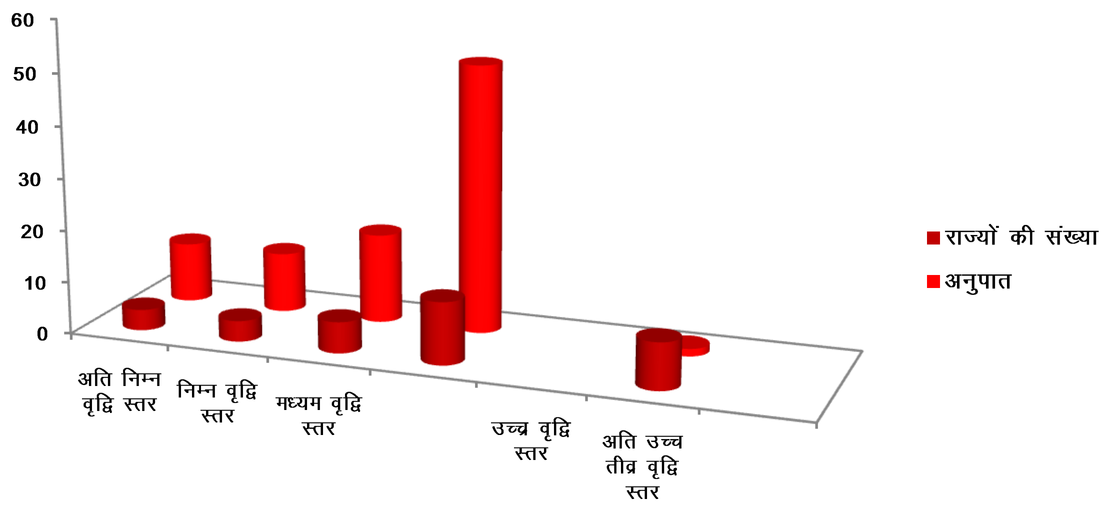

श्रोतःब्यूरो आफ इमिग्रेशन एवं पर्यटन विभाग भारत सरकार वर्ष 2006 एवं 2018

REFERENCES

Archer, B.H. 1989. Tourism and Island Economies: Impact Analyses, in C.P. Cooper (ed.), Progress in Tourism, *Recreation and Hospitality Management* Chapter **8**: 125.34, London and New York: Belhaven Press

Ganesh, Auroubindo and Dr. Madhavi, C., Impact of Tourism On Indian Economy . A Snapshot, Journal of Contemporary Research in Management, Volume.1, No.1, 2 Jan . June 2007 pp235.240, Down loaded from http://www.181.240.1.PB.pdf on 2.12.2014

Hall, C.M., 1992. Hallmark Tourist Events: Impacts, management, and planning, London, Belhaven.

Pao, Jay, W. 2005. A Review of Economic Impact Analysis for Tourism and Its Implications for Macao, retrieved on 4.01. 2016 from www.Econ.impact_en.pdf

Pearce, G. and Butler, Richard, W. 2010. Measuring and Interpreting the Economic Impact of Tourism: 20/20 Hindsight and Foresight by Douglas Frechtling and Egon Smeral, Good fellow Publishing, down loaded from www. FrechtlingSmeral2020.pdf on 04.01.2016

Sharma, Kshitiz, 2014. Introduction to Tourism Management, McGraw Hill Education(India) Private Limited, New Delhi

Smith, S.L.J. 1997. TSAs and the WTTC/WEFA Methodology: Different Satellites or Different Planets? *Tourism Economics* **3**(3): 249.263.